ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27 | मई-I-2025 | अंक - 03 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका

101 वर्षीय दादी का महाप्रयाण

ज्ञान सागर की गहराईयों में उतर, उत्तरोत्तर प्रगति करने वाली, प्रकृति के पंचतत्वों को अपने वश कर, परमात्मा के ज्ञान रत्नों को अपने में धारण कर, समाज के हर एक वर्ग की प्रेरणास्रोत, मानव दिग्दर्शिका और आध्यात्मिक-पदचिन्ह बनाने की नायिका, परमात्म रत्नों से स्वयं को सजाने वाली जहान की नूर, परमात्मा की हूर हमारी अति स्नेही आदरणीया दादी जी को हम सभी का शत-शत नमन।

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी अव्यक्त होकर वतनवासी हुई। उन्होंने अहमदाबाद के ज़ाइडस हॉस्पिटल में रात्रि 1:20 बजे अंतिम सांस ली। उनके पार्थिव शरीर को शान्तिवन में लाया गया और मुख्यालय शान्तिवन के कॉन्फ्रेंस हॉल में अंतिम दर्शनार्थ रखा गया था। 10 अप्रैल को सुबह 10 बजे अंतिम संस्कार दादी जी के कॉटेज के सामने बगीचे में किया गया।

चार वर्ष पूर्व बनी थीं मुख्य प्रशासिका

चार वर्ष पूर्व दादी हृदयमोहिनी के देहावसान के बाद आप मुख्य प्रशासिका बनी थीं। पिछले 40 साल से आप संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्षा रहीं। आपके नेतृत्व में वर्ष 2006 में भारतभर में निकाली गई युवा पदयात्रा को लिम्का ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया था। आप मात्र 13 वर्ष की आयु में ही ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ीं और पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। 101 वर्ष की आयु में भी दादी जी की दिनचर्या अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3:30 बजे से शुरू हो जाती थी। सबसे पहले वह परमपिता शिव परमात्मा का ध्यान करती थीं और सुबह से ही उनका हर कर्म परमात्म श्रीमत के अनुसार चलता रहा। राजयोग मेडिटेशन उनकी दिनचर्या में शामिल रहा। उनका पूरा जीवन निर्माणचित्त रहा।

सिंध हैदराबाद में हुआ था जन्म

25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद के एक साधारण परिवार में दैवी स्वरूपा बेटी ने जन्म लिया। माता-पिता ने जिनका नाम रखा लक्ष्मी। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बेटी अध्यात्म और नारी शक्ति का जगमग सितारा बनकर सारे जग को रोशन करेगी। बचपन से अध्यात्म के प्रति लगन और परमात्मा को पाने की चाह में मात्र 13 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी ने विश्व शान्ति और नारी सशक्तिकरण की मुहिम में खुद को झोंक दिया।

87 वर्ष की यात्रा की रहीं साक्षी

दादी वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना से लेकर आज तक 87 वर्ष तक यात्रा की साक्षी रही हैं। पिछले 40 से अधिक वर्षों से आप संगठन के ही युवा प्रभाग की अध्यक्ष रही हैं। आपके नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा पद यात्राएं, साइकिल यात्रा और अन्य अभियान चलाए गए।

ब्रह्मा बाबा के साथ 32 साल का लंबा सफर

दादी रतनमोहिनी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार रहे। छोटी-सी उम्र होने के बाद भी आप अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने के स्थान पर ईश्वर की आराधना में अपना ज़्यादा वक्त गुजारती थीं। आपका स्वभाव धीर-गंभीर था। पढ़ाई में भी होशियार होने के साथ प्रतिभा सम्पन्न रहीं हैं। दादी जी ने वर्ष 1937 से लेकर ब्रह्मा बाबा के हर पल साथ रहीं। बाबा का कहना और दादी का करना यह विशेषता दादी जी में शुरू से ही थी।

दादी जी के नेतृत्व में 40 साल से युवा प्रभाग

युवा प्रभाग द्वारा दादी जी के नेतृत्व में 2006 में निकाली गई स्वर्णिम भारत युवा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा ने ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास में एक नया अध्याय लिख दिया। 20 अगस्त 2006 को मुंबई से यात्रा का शुभारंभ किया गया और 29 अगस्त 2006 को तिनसुकिया,असम में समापन किया गया। स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा द्वारा पूरे देश में 30 हज़ार किमी का सफर तय किया गया। इसमें पांच लाख से अधिक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया। सवा सौ करोड़ लोगों को शान्ति, प्रेम, एकता, सौहार्द, विश्व बंधुत्व, अध्यात्म, व्यसनमुक्ति और राजयोग का संदेश दिया गया।

देश में बनाए कई रिकॉर्ड

दादी के ही नेतृत्व में 1985 में भारत एकता युवा पदयात्रा निकाली गई। इसमें 12550 किमी की दूरी तय की गई। यात्रा का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय से किया था। कन्याकुमारी से दिल्ली(5000 किमी) की सबसे लंबी यात्रा रही। भारी बारीश और तूफान के दौरान भी राजयोगी भाई-बहनों के कदम नहीं रुके और रेगिस्तान, जल, जंगल, पर्वत को लांघते हुए मिशन पूरा किया। दादी के निर्देशन में करीब 70 हज़ार किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्राएं निकाली गईं।

ब्रह्माकुमारीज़ बहनों की ट्रेनिंग और नियुक्ति का किया नेतृत्व

वर्ष 1996 में ब्रह्माकुमारीज़ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तय हुआ कि अब विधिवत कन्याओं को ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए एक ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने दादी जी को ट्रेनिंग प्रोग्राम की मुखिया नियुक्त किया। तब से लेकर आज तक बहनों की नियुक्ति और ट्रेनिंग की ज़िम्मेदारी दादी जी के हाथों में रही। दादी के नेतृत्व में अब तक 6000 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों की नींव रखी गई है।

आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को ब्रह्मा बाबा का चित्र भेंट करते हुए मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी जी।

शान्तिवन के निकट मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के शिलान्यास के अवसर पर शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी।

1985 में दादी ने की 13 पैदल यात्राएं...

वर्ष 2006 में निकाली गई युवा पदयात्रा ने लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया, वही सभी यात्रियों ने 30 हज़ार किमी की पैदल यात्रा तय की। दादी ने 13 मेगा पैदल यात्राएं की हैं। अगस्त 1989 में देश के 67 स्थानों पर एक साथ अखिल भारतीय नैतिक अभियान चलाया गया। अभियान में सैकड़ों स्कूल-कॉलेजों, युवा क्लब और सामाजिक सेवा संस्थानों में प्रदर्शनियां, व्याख्यान, सेमिनार और रचनात्मक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनमें कई राज्यों के राज्यपाल व मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया।

दादी जी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाज़ा

20 फरवरी 2014 को गुलबर्गा विश्व विद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में कुलपति प्रोफेसर

- शेष पेज 3 पर...